खड़िया जनजाति में विवाह संस्कारः एक मानव बैज्ञानिक अध्ययन (सिमडेगा जिला के संदर्भ में)

शोधार्थी सेलेस्टीन सोरेंग

मानव विज्ञान विभाग, रांची विश्वविधालय,

रांची

की वर्ड– खड़िया, विवाह, संस्कार, परम्परा आदि।

परिचयः–

खड़िया भाषा में विवाह को केरसोंग कहा जाता है। खड़िया समाज में वयस्क युवक एवं युवतियों को निश्चित समयान्तराल में शादी हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। लड़का एवं लड़की की लगभग क्रमशः 23–25 तथा 20–22 के लगभग शादी हेतु सही समय माना गया है। खड़िया में अपने गोत्रों में ही शादी हेतु बल दिया जाता है बर्हिगोत्र विवाह मनाही किया गया है। परंतु, आज के समय में शादी के समयान्तराल में विभिन्न पायी जाती है जो 26 वर्ष के बाद में ही शादी होने लगी है जिसका प्रमुख कारण युवक–युवकतियों में रोजगार, काम–धाम का नही होना है।

दुध एवं डेलकी खड़िया में शादी लड़का–लड़की एवं घर के सदस्यों की स्वीकृति पर निर्भर करता है ताकि, दोनों परिवारों सहित समाज में समन्वय बना रहे। लड़का–लड़की की स्वीकृति होने के बाद सर्वप्रथम लोटा पानी के माध्यम से आगे शादी हेतु कदम बढ़ाया जाता है। जो एक विधि–विधान के द्वारा होता है जिसमें सामाजिक–सांस्कृतिक, धार्मिक पक्ष जुड़े होते हैं। पूर्व के समय में खड़िया में

विवाह के अवसर पर अपने पूर्वजों, बेडोलड़ाय को स्मरण किया जाता है। डेलकी में सभी रीति–रिवाज सांवसर रीति–विधियों से होता है तो, दूध खड़िया में जो लोग ईसाई धर्म को अपना चुके हैं वे चर्च में जा कर ईसाई रीति–विधियों से विवाह किया जाता है फिर, लड़का–लड़की के घर में परम्परागत रूप से होता है। परम्परागत नाच–गान, खान–पान, पहनावा, गाजे–बजे के स्थान पर आधुनिक पद्धति ने ले लिया है जैसे–परम्परागत बाजा मंदार, ढोलक, ढोलकी, नगाड़ा के स्थान पर उच्च ध्वनि युक्त लाउडस्पीकर, डीजे जैसे बाजा आ गए हैं। साथ ही परम्परागत खान पान खड़िया का दाल (कुरथी, उरद), गोड़ा चावल का भात, बांडा (सुवर), देहाती मुर्गी, बोरी झोर आदि के स्थान में दाल (मंसूर,चना), बाबा चावल, बांसमति चावल, खस्सी, मुर्गा (बोयलर), मिठाई, चोमीन, पनीर आदि का प्रबंधन किया जा रहा है। साथ ही पूर्व में शादी समारोह में सभी कोई जमीन में लकड़ी को लगाकर (बैठने हेतु) सखुवा दोना पत्ता में खाना खाते थे

तकनीकः– अनुसूची सह प्रश्नावली के माध्यम से खड़िया समुदाय के विवाह के संबंध में तथ्य संग्रह साक्षात्कार तकनीक के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत लेख झारखंड राज्य के सिमडेगा जिला के डेलकी एवं दूध खड़िया से संबंधित है जो मेरे पीएच० डी कार्य से संबंधित अध्ययन क्षेत्र से है साथ ही अन्य स्त्रोतों से तथ्य प्राप्त किया गया है।

खड़िया में विवाह की प्रक्रिया–

कन्या तलाषः–

जब लड़का विवाह के योग्य हो जाता है तब माँ–बाप योग्य लड़की की तलाश करने लगते हैं इसके लिए सूया का सहारा लेते हैं। सूया दो परिवारों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। जिनका समाज में होने वाले विवाह में अहम भूमिका रहता है। सूया लड़की या लड़का के तलाश में बहुत ही सावधानी बरतता है। चूंकि यदि लड़का चोर, धूमकड़, लर्म्पट, अयोग्य होता है तो लड़की–लड़का परिवार वाले सूया पर दोषारोपण करते हैं।

आज के समय में दुध एवं डेलकी के मध्य पहले ही लड़का–लड़की एक–दुसरे को पसन्द करते हैं। इस परिस्थिति में सूया को ज्यादा कठिनाई दो परिवारों को जोड़ने में नहीं होता है। आज के समय में तकनीकि प्रगति के कारण मोबाईल बड़ा उत्तप्रेरक हो गया है या अन्य माध्यमों से एक–दूसरे का फोटो या सम्पर्क हो जाता है।

सम्पर्क स्थापितः–

जब अगुवा (सूया) को स्पष्ट रूप से पता चलता है कि विवाह के लिए रमे''ा (काल्पनिक) के घर में फूल कन्या तैयार हो गया है तब अगुवा एक–दो व्यक्ति सहित मेहमान के रूप में जाता है। लड़की घर के लोग उनका स्वागत करते हैं फिर हाल समाचार पूछते हैं। जो सुलभ होता है, खाने के लिए आमंत्रण करते हैं। फिर कुछ देर के लिए आराम करने के बाद शाम में लड़की परिवार के लोग भी गाँव के अगुवा, बुद्धिजीवी वर्ग सगे–सम्बंधियों को बुलाते हैं एवं दोनों तरफ से बात–चीत होती है।

कन्या दर्षनः–

वापस अगुवा आकर लड़के के माता–पिता एवं नजदीकी रिश्तेदार को लड़की एवं लड़की के परिवार के बारे बताता है। यदि उन्हें लड़की पसन्द होती है तो कुटुम्ब लेकर लड़की पक्ष के यहाँ जाते है। कुटुम्ब के वापस आने के बाद लड़का भी अपने दोस्तों के साथ लड़की के यहाँ जाता है। यदि दोनों तरफ से सहमति बनता है तो आगे बात बढ़ायी जाती है। आज के भाग–दौड के समय 90 प्रतिशत लड़का–लड़की पक्ष वाले देखकर ही आगे की बात रखते हैं। आज तो ऐसा भी पाया जा रहा है कि जो दुध खड़िया ज्यादा शिक्षित एवं बड़े शहरों में रह रहे हैं वे इन्टरनेट में लड़का–लड़की वीडियो कालिंग का सहारा लेते हैं। फोटो की देखा–देखी करते हैं एवं एक–दुसरे को पसन्द करने के बाद ही माता–पिता को जानकारी देते हैं।

घर देखी (ओयोना):–

घर देखी का अर्थ लड़की कुटुम्ब वाले 20–25 लोगों को लेकर लड़का पक्ष के यहाँ जाते हैं। परम्परा के अनुसार घर के थोड़ी दुरी पर रूकते हैं। लड़का पक्ष वाले मेहमानों को आदर सत्कार के साथ ही घर में प्रवे''ा करते हैं। खैनी, नास्ता, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का पानी, हड़िया का प्रबंध भी किया जाता है। इस बीच दोनों पक्ष के कुटुम्ब वार्त्तालाप भीं करते रहते हैं। इस समय खस्सी, बांडा (सुवर, मुर्गा) या अन्य आर्थिक स्थिति के अनुसार मीट भात का आयोजन होता है। हंड़िया के साथ चखना में दिया जाता है।

मंगनी या लोटा पानीः–

खड़िया भाषा में जुंङजुङ डाय लोटडा भी कहा जाता है। 09 या 07 कुटुम्ब को लेकर लड़का पक्ष वाले लड़की पक्ष के यहाँ जाते है, मंगनी के अवसर पर। इस अवसर पर लड़का पक्ष वाले लड़की के लिए सिंगार के सभी साधन प्रदान करते हैं, उसके बाद परम्परागत ढंग से मंगनी की रस्म को पूरा किया जाता है। पूरे कुंटुम्ब के बीच वधु के घर में लोटा पानी की रस्म की जाता है परम्परा व्यवस्था के तहत वर–वधु को आमने–सामने एक–दुसरे को देखकर पसन्द, नापसन्द के बारे में दोनों से पूछा जाता है। वर एवं वधु के दोनों की तरफ से संगी (दोस्त) होते हैं। इस समय दोनों पक्षों को अंजोर द्वारा परिचय कराया जाता है। एवं अंत में बेडोलड़ाय एवं पूर्वजों से आर्शीवाद हेतु प्रार्थना किया जाता है। वर्तमान समय में, भी लोटा–पानी की रस्म कायम है। डेलकी एवं दुध खड़िया दोनों में परम्परागत रस्म जीवित है।

छोटा एवं बड़ा गोतियाः–

वधु पक्ष की ओर से वर पक्ष के यहाँ छोटा एवं बड़ा गोतिया जाने की परम्परा सदियों से चला आ रहा है जिसमें स्त्री–पुरूष, बच्चे, बुर्जुग एवं अन्य सगे–सम्बंधी जाते हैं। सीमित भी हो सकते हैं अथवा काफी संख्या में भी जाते हैं आने जाने हेतु अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार वाहनों का प्रबंधन किया जाता है। जब वधु पक्ष के कुटुम्ब वर पक्ष के यहाँ पहुँचते है तक घर से कुछ दुरी पर ठहरा दिया जाता है। खड़िया परम्परा के अनुसार वर पक्ष के अगुवा के अगुवाई के माध्यम से सभी लोगों को स्वागत किया जाता है। सभी लोगों की हाथ पैर को आदर के साथ पानी से धोया जाता है। जिससे प्रसन्न होकर पैर धोनी वाली महिला को खुशी स्वरूप 10–15 रूपया वधु पक्ष वाले देते हैं। तथा दोनों पक्षों के द्वारा हास–परिहास किया जाता है एवं विधि–विधान द्वारा रस्में पूरी की जाती है। अंत में, सबको भोजन कराकर खुशी–खुशी सभी लोगो को आदर–सत्कार पूर्वक विदाई की जाता है।

ऐसी परम्परा खड़िया समाज में आज भी विद्यमान है। यद्यपि समय के साथ इसमें थोड़ी बहुत बदलाव दिखाई देता है। आज सुविधा के लिए छोटा एवं बड़ा गोतिया एक साथ किये जाते हैं। **सुखमुडः–**

शाब्दिक अर्थ में कहा जा सकता है कि कन्या का मूल्य चुकाना। यह परम्परा प्राचीन समय से होता आ रहा है जो आज भी परम्परा विद्यमान है। वर्त्तमान समय में धान के जगह पर रूपया–पैसा दिया जाता है साथ ही कपड़ा वधु एवं उनकी माँ के नाम से दिया जाता है। लड़का कुटुम्ब वाले कन्यादान वधु कुटुम्ब वाले को देते हैं जिसमें वधु हेतु साया, जाकेट, पायल, सिंदूर, बिंदी, साड़ी, चुड़ी–कंगन एवं अन्य श्रृंगार की चीजें इत्यादि दी जाता है। यद्यपि आज भी पूर्व की भाँति सुखमुड़ के रूप में दो जोड़ा बैल दिया जाता था। बैल या गाय के जगह पर जो समाज द्वारा निर्धारित 10,000 रू. से कम नहीं होता है। जिस परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है, उसमें कम में भी माना जाता है।

- **षादी (केरसोङ):–**

न्योता देना–

डेलकी और दूध खड़िया में किसी भी खड़िया परिवार में शादी में अपने रिश्तेदारों को आमंत्रण दिया जाता है। परम्परागत रूप से न्योता के रूप में हल्दी रंगा हुआ चावल दिया जाता है जिसे घर के कोई बुजुर्ग या मुख्य व्यक्ति ही बाँटता आ रहा है। वर्तमान में शादी के निमंत्रण हेतु कार्ड छाप कर बाँटने की परिपाटी भी शामिल हुई है जो गैर–खड़िया जातियों एवं जनजातियां के संपर्क के फलस्वरूप नजर आता है।

मांडवा–

विवाह से एक दिन पूर्व लड़का के यहाँ मंडवा गाड़ा जाता है। मंडवा गाड़ने वाले सभी युवकों को मड़वा हंड़िया दिया जाता है तथा भात भी दिया जाता है। यद्यपि आर्थिक स्थिति जिनका मजबूत होता है वह मीट भात भी खिलाता है। मंडवा श्रृंगार के बाद दुल्हा बाबू को पीढ़ा में बैठाया जाता है तथा दुल्हा का तेल–लेपन किया जाता है एवं मंडवा का सात चक्कर लगाया जाता है। दूल्हा के पूरे शरीर को हल्दी का लेपन किया जाता है। परम्परागत रूप से खड़िया समाज में शादी के एक दिन पूर्व ही लड़का–लड़की के घर–आँगन में मंडवा छादन किया जाता है। मंडवा हेतु अविवाहित गाँव के लड़का लोग जंगल से अनेको सरई डलियों को काटकर लाते हैं साथ ही दोना–पत्तल हेतु भी सरई पत्ता तोड़ा जाता है। वर्तमान में खड़िया समाज में मंडवा छादन में परिवर्तन नजर आता है। परम्परागत रूप से जंगल या अपने घर द्वार की आस–पास से सरई डाली को काटकर मंडवा छादन किया जाता है। गैर–खड़िया की देखा–देखी शामियाना भी गाड़ा जाने लगा है।

न्योता घुसना–

मंडवा गाड़ने के दिन ही शाम के समय न्योता घुसा जाता है साथ ही अपने साथ चावल, दाल, सब्जी, हंड़िया आदि भी लाया जाता है इस अवसर पर हँडिया भी कुटुम्ब को दिया जाता है एवं शाकाहारी या मांसाहारी भात भी दिया जाता है। न्योता घुसने की परम्परागत प्रक्रिया वर्तमान समय में भी डेलकी और दूध खड़िया समाज में दिखाई देता है।

बारात जाना–

बारात जाने की परंपरा सदियों पुरानी रिवाज है जो वर की तरफ से विवाह सम्पन्न करने और वधू को लाने हेतु जाया जाता है। परम्परागत रूप से बारात की प्रबन्धन अपने आर्थिक स्थिति के अनुसार की जाती है और किसी प्रकार से छोटी या बड़ी गाड़ी का प्रबंध किया जाता है। आज के समय नगाड़ा, ढोलक, आधुनिक वाद्य यंत्र का प्रयोग करते हुए बारात के दिन अपने सुया के अगुवाई में वर पक्ष के लोग वधू पक्ष के गाँव जाते हैं शादी–विवाह के सभी नेक–दस्तूर, खान–पान, लेन–देन आदि को पूरा किया जाता है।

पूर्व में बारात एवं शादी की रस्म में दो दिनों का समय लगता था। परन्तु आज एक दिवसीय कार्यक्रम के माध्यम से सभी रस्मों को किया जाता है। इस सम्बंध में तथ्य प्राप्त हुए कि ऐसी व्यवस्था खड़िया महाड़ोकलो की तरफ से तीनों खड़िया में लागु किया गया है। ऐसा करने के पीछे समय की बचत, रात में होने वाले लड़का–लड़की के मध्य गलत कार्यों को रोकना, झगड़ा–झंझट से बचना इत्यादि है। प्रायः शादी में हड़ियां, दारू पीया जाता है जिससे अपनी मर्यादा को, कुछ लोग भूल जाते हैं।

चुमावनः–

चुमावन वधु के घर में सम्पन्न होता है। बरात के पहुँचने से पूर्व ही चुमावन की व्यवस्था की जाती है। बारात को परिछावन के कुछ समय बाद ही वर–वधु को एक साथ चुमावन मंडवा के मध्य बैठाया जाता है। ताकि गाँव के कुटुम्ब द्वारा वर–वधु को आर्शीवाद दिया जा सके यह कहते हुए कि दोनों वर–वधु एवं राजी–खुशी, सुख–दुख में एक साथ कर्त्तव्यों का निर्वाहन करें। संवासार खड़िया में तो बारात को परिछावन के कुछ समय बाद ही चुमावन की व्यवस्था की जाती है। संवसार रीति विधि द्वारा पूजा–पाठ कर चुमावन आरंभ किया जाता है जहाँ वधु पक्ष वाले सबसे पहले परिवार के प्रमुख सदस्य बेटी को आर्शीवाद देने की

शुरूआत करते हैं। तत्पश्चात सगे–सम्बंधियों एवं पूरे गाँव के कुटुम्ब शामिल होते हैं। चुमावन रस्म करने का उद्देश्य घर परिवार, दोस्तों, सम्बंधियों से उपहार स्वरूप मिलने वाले चीजों को लेकर वधु के यहां जाना है जो वर–वधु के जीवन में काम आता है।

प्रो० फ्रांसिस कुल्लू के कथानुसार समय की बचत होती है साथ ही किसी प्रकार अनहोनी की घटना न हो। आज के भाग–दौड के समय में बारात की परम्परा एक ही दिन का होता है परंतु, आज से लगभग 25–30 साल पूर्व बारात दो दिन की होती थी। आज खड़िया सामुदाय में ऐसी व्यवस्था समाप्त होता दिख रहा है। जिस दिन बारात जाते हैं उसी दिन चुमावन करके विदाई दी जाती है अर्थात, सभी काम एक ही दिन में सम्पन्न हो जाता है।

विदाई समारोह–

परंपरागत सामाजिक, धार्मिक, नेक–दस्तूर को पूरा करते हुए डेलकी और दूध खड़िया समाज में विदाई का काम चुमवान के तुरंत बाद ही कर दिया जाता है और वधू को घर से बाहर निकाल कर घर के सभी लोगों से मिलने बाद या सगी–संबंधी से भावनात्मक रूप से मिलने के बाद कुटुम्ब के सभी लोग नए वर–वधू को सूखी जीवन हेतु आशीर्वाद दिया जाता है उसके बाद भाई या रिश्तेदार कुछ दूर तक छोड़ कर पुनः वापस आ जाते हैं। वर्तमान में खड़िया सभा द्वारा निर्धारित शादी दिन में विदाई समारोह को सम्पन्न किया जाता है।

बहुरत परम्पराः–

विवाह के एक सप्ताह के बाद या अपनी सुविधा अनुसार बहुरत परम्परा का प्रावधान खड़िया जनजाति में है। लड़के के घर से लड़की अपनी माता पिता के पास पहुँचती है तब गाँव के सगे–सम्बंधी लड़का–लड़की को आर्शीवाद देते हैं। लड़की अपने साथ रोटी या गुंडी लेकर जाती है जिसे वह घर में बनाकर पूरे गाँव में सगुन के रूप में बांटती एवं खुशी का परिचय देती है। इससे गाँव वाले समझजाते हैं कि लड़की ससुराल से आ गयी है एवं खुश है। यह परम्परा वर्त्तमान समय में खड़िया के बीच आज भी विद्यमान है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि डेलकी और दूध खड़िया समाज विवाह रस्म एक पवित्रता के रूप में सदियों से कायम है जिसके माध्यम से न ही दो विपरीत लिंग वाले आपस में मिलते हैं बल्कि, विवाह को सामाजिक मान्यता देकर एक नया जीवन जीने हेतु स्वीकृति प्रदान करते हैं साथ ही दो अनजाने परिवार वाले आपस में रिश्तेदारी में बदल जाते हैं। वर्तमान में भी माँ–बाप द्वारा चुने हुए लड़का–लड़की के शादी को सबसे अच्छा माना जाता है। लेकिन, साथ ही गैर–खड़िया जाति का प्रभाव दिखाई देता है और रस्म के अवसर पर खूब जोरों से लेन देन किया जाता है जो खड़िया समाज में नहीं था दूध खड़िया समाज प्रभावित नजर आता है जो जिला के समीप रहते हैं। लेकिन, गाँव में आज भी परम्परागत शादी विवाह बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है एवं पूरे रीझ रंग से सम्पन्न होता है जिसमें गाँव के कुटुम्ब सहित वर–वधू के सभी रिश्तेदार शामिल होते हैं।

स्त्रोत–

1. डुँगडुँग, डॉ. जोवाकिम खड़िया जीवन और परम्पराएं, काथलिक प्रेस, राँची, 1999,
2. टेटे, निकोलस रविनंदन सिन्हा सम्पादन (एस० सी० राय) खड़िया समाज भाग–1 2011,
3. विद्यार्थी, प्रो. ललिता प्रसाद एंव बी.एस. उपाध्याय, दी खड़ियाः देन एण्ड नाउ, कंपरेटिव स्टडी आफ हिल, दूध, एवं डेलकी खड़िया, 1980
4. अखबार समाचार एवं नेट सर्फिंग